

सम्पूर्ण सामान्य हिन्दी

MCQ एवं PYQ सहित

लेखपाल ,सीटेट ,यूपीटेट ,रीट ,एचटेट
एम .पी .व्यापम

एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु अत्यंत उपयोगी

भाषा, वर्ण-विचार

संधि, वर्तनी, वाक्य-दोष, विराम चिन्ह, शब्द विचार

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण, कारक

उपसर्ग, प्रत्यय

पर्यायवाची शब्द, विपरीतार्थक शब्द

समास, अलंकार, रस, छन्द

संक्षेपण, सारांश-लेखन

अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

हिन्दी भाषा एवं व्याकरण परिचय

(पूर्ववर्ती परीक्षाओं के वस्तुनिष्ठ प्रश्नों सहित)

भाषा

मानव अपने विचारों के आदान प्रदान के लिए जिस साधन का प्रयोग करता है उसे भाषा कहते हैं।

अन्य शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि भाषा दो व्यक्तियों के मध्य उनके वैचारिक विनिमय का साधन है।

भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से हम सोचते हैं और अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। मनुष्य अपने विचार, भावनाओं एवं अनुभूतियों को भाषा के माध्यम से ही व्यक्त करता है।

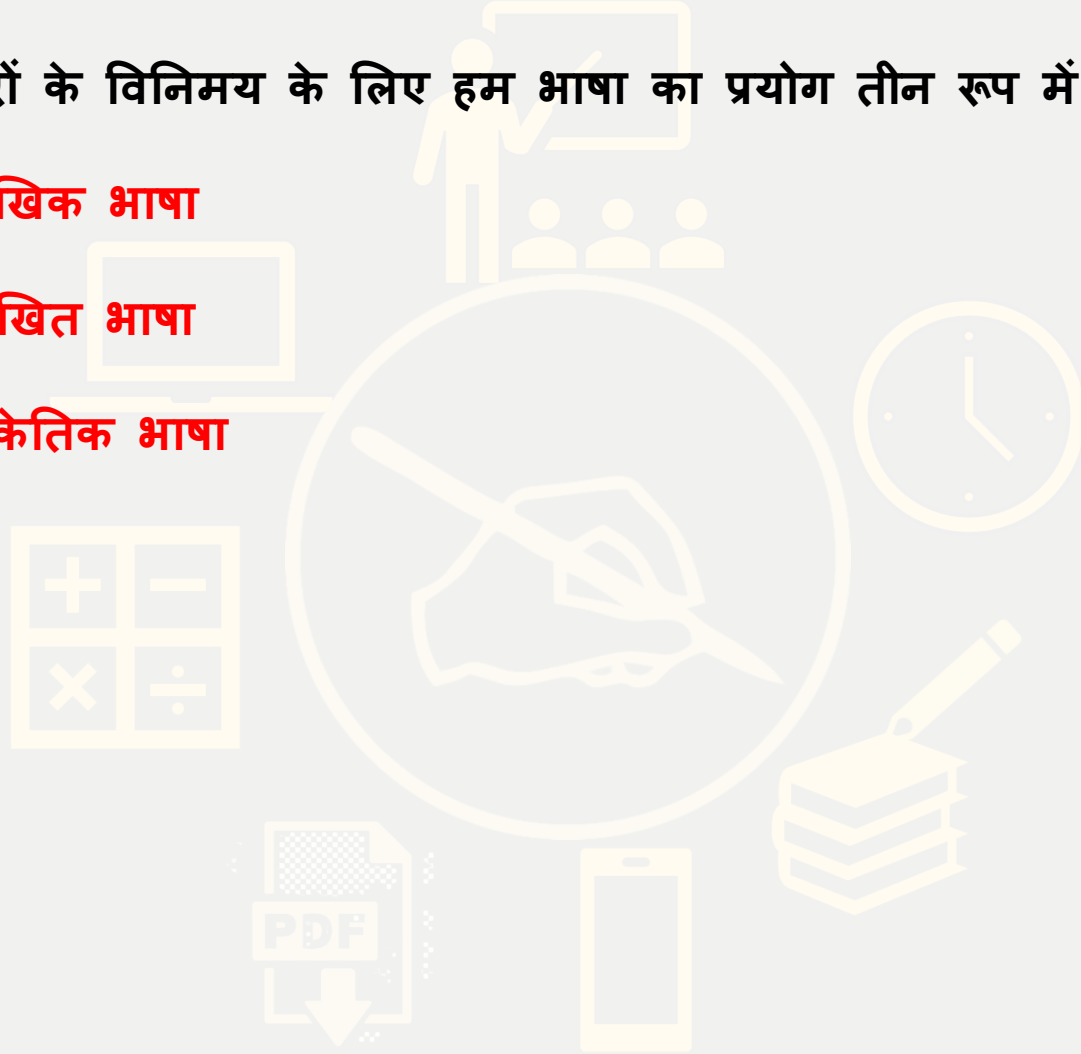
भाषा मुख से उच्चारित होने वाले एवं लिखित शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिनके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है।

विचारों के विनिमय के लिए हम भाषा का प्रयोग तीन रूप में करते हैं –

1- मौखिक भाषा

2- लिखित भाषा

3- सांकेतिक भाषा



1- मौखिक भाषा

- भाषा के जिस रूप का प्रयोग हम बोलकर करते हैं, उस भाषा को मौखिक भाषा कहते हैं।
- व्यक्ति मौखिक भाषा का प्रयोग अपने जीवनकाल में सबसे पहले करना सीखता है।
- "मौखिक भाषा" को भाषा का मूल रूप कहते हैं।

2- लिखित भाषा

- भाषा का वह रूप जिसमें हम अपने विचार विनिमय के लिए लिखित चिन्हों ,संकेतों एवं लिपियों का प्रयोग करते हैं वह भाषा का लिखित स्वरूप कहलाता है।
- लिखित भाषा सदैव ही मौखिक भाषा की उपरान्त आती है।
- लिखित भाषा, भाषा को एक स्थायी स्वरूप प्रदान करती है , इसलिए इसे भाषा का स्थाई रूप कहते हैं।
- जैसे - पत्र-पत्रिकाएं, पाठ्यपुस्तकें, समाचार-पत्र आदि।

3- सांकेतिक भाषा

कई बार हम अपने विचारों को प्रकट करने के लिए मौखिक एवं लिखित भाषा का प्रयोग न करते हुए सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते हैं।

सांकेतिक भाषा में हम अपने हाव भाव के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्ति करते हैं।

जैसे-

- सड़क पर चलते हुए यदि रेड सिग्नल हो जाए तो रुक जाना जाना , ग्रीन सिग्नल हो जाए तो चलने लगना।
- किसी को प्रोत्साहित करने के लिए ताली बजाना।

हिंदी भाषा का विकास क्रम

संस्कृत → वैदिक → लौकिक → पाली
→ प्राकृत → अपभ्रंश → सौर शैली अपभ्रंश →
हिन्दी

हिन्दी भाषा का विकास-क्रम -

भारत के लिखित इतिहास में 1500 ई. पू. से 500 ई. पू. तक का समय प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का काल माना जाता है। इस समय संस्कृत ही बोलचाल की भाषा थी।

संस्कृत भाषा के दो रूप हैं-

1- वैदिक संस्कृत 2- लौकिक संस्कृत

1- वैदिक संस्कृत

➤ हिंदुओं के प्राचीन वेद धर्मग्रंथ वैदिक संस्कृत में लिखे गए हैं।

➤ ऋग्वेद की वैदिक संस्कृत सबसे प्राचीन रूप है।

2- लौकिक संस्कृत -----

- संस्कृत भाषा का यह दूसरा स्वरूप है
- इस भाषा में हिन्दुओं के रामायण ,महाभारत जैसे धार्मिक ग्रंथों की रचना हुई ।
- यह भाषा वैदिक भाषा की तुलना में सरल थी इस कारण इसका प्रचार प्रसार आगे हुआ ।
- वैदिक भाषा सीखने एवं प्रयोग में कठिन थी, इस कारण से इसका प्रचार प्रसार आगे नहीं हो पाया और यह वेदों की भाषा बनकर ही सीमित रह गई ।
- भाषा के जिन स्वरूपों में परिवर्तन हुये वह सभी लौकिक भाषा में हुये ।

3 .पाली भाषा –

- लौकिक भाषा में आये हुये परिवर्तनों के कारण जिस नई भाषा का जन्म हुआ वह पाली भाषा थी।
- पाली भाषा बौद्ध धर्म के समय प्रचलन में थी।
- बौद्ध धर्म से जुड़े हुये धार्मिक ग्रंथों की रचना पाली भाषा में ही हुई हैं।

4.प्राकृत भाषा –

- पाली भाषा में आये हुये परिवर्तनों के कारण जिस नई भाषा का जन्म हुआ वह प्राकृत भाषा थी।
- प्राकृत भाषा जैन धर्म के समय प्रचलन में थी।
- जैन धर्म से जुड़े हुये धार्मिक ग्रंथों की रचना पाली भाषा में ही हुई हैं।

5 अपभ्रंश

अपभ्रंश से विकसित बोलियाँ-

अपभ्रंश के भेद

शौरसेनी अपभ्रंश

पैशाची अपभ्रंश

ब्राचड़ अपभ्रंश

महाराष्ट्री अपभ्रंश

मागधी अपभ्रंश

आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था

पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पहाड़ी

लहंदा, पंजाबी

सिन्धी

मराठी

बिहारी, बांग्ला, उड़िया और असमिया

भारतीय आर्य भाषाएँ :-

भारतीय आर्य भाषा समूह को काल-क्रम की दृष्टि से निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है -

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक)

1. वैदिक संस्कृत (1500ई.पू. से 1000 ई.पू. तक)
2. लौकिक संस्कृत (1000 ई.पू से 500 ई.पू. तक)

2. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (500 ई.पू. से 1000 ई.तक):

1. पालि (500 ई.पू. 1 ई)
2. प्राकृत (1 ई. से 500 ई. तक)
3. अपभ्रंश (500 ई. से 1000 ई. तक)

3.आधुनिक भारतीय आर्यभाषा (1000 ई.से अब तक) :-

तब से आज तक के समय को तीन कालों में विभाजित किया गया है।

आदिकाल (1000 से 1400 ई. तक),

मध्यकाल (1400 से 1800 ई. तक)

आधुनिक काल (1800 से अब तक)

संवैधानिक द्रष्टि से हिंदी

- भारतीय संविधान की 8 वीं अनुसूची में 22 भाषाओं का उल्लेख है एवं भारतीय संविधान के भाग -17 में भाषा सम्बन्धी प्रावधान अनुच्छेद 343 से 351 में किये गये हैं।
- हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में 14 सितम्बर सन् 1949 को स्वीकार किया गया।
- इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिये 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- धारा 343(1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी होगी।

- संविधान की आठवीं अनुसूची में देश की आधिकारिक भाषाओं की सूची दी गई है। अनुच्छेद 344(1) और 351 के अनुसार इस अनुसूची में 22 भाषाएँ अंकित हैं। ये भाषाएँ हैं -
- असमिया, बांग्ला, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु उर्दू.

दरअसल, इनमें से 14 भाषाओं को संविधान में सम्मिलित किया गया था परंतु,

- 1967 ई. में सिन्धी भाषा को आठवीं अनुसूची में जोड़ा गया। (21 वें संविधान संशोधन)
- 1992 में कोंकणी ,मणिपुरी और नेपाली को जोड़ लिया गया। (71 वें संशोधन अधिनियम)
- 2003 में बोड़ो , डोंगरी ,मैथिली और संथाली को जोड़ लिया गया। (92 वें संविधान संशोधन)

लिपि

किसी भी भाषा को लिखित/स्थायी रूप देने के लिए जिन चिहनों अथवा लिखित संकेतों का प्रयोग किया जाता है वे लिपि कहलाते हैं। एक ही लिपि का प्रयोग एक से अधिक भाषाओं को लिखने के लिए किया जा सकता है, जैसे-हिंदी व संस्कृत दोनों को लिखने के लिए एक ही लिपि देवनागरी का प्रयोग होता है।

देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। विभिन्न लिपियों को लिखने के तरीके भी भिन्न होते हैं, जैसे-हिंदी को बाएँ से दाएँ लिखा जाता है व उर्दू को दाएँ से बाएँ।

भाषा	लिपि
हिंदी	देवनागरी
संस्कृत	देवनागरी
अंग्रेजी	रोमन
मराठी	देवनागरी
पंजाबी	गुरुमुखी

राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा

राजभाषा

शासन के संचालन या काम-काज की भाषा को राजभाषा कहा जाता है हिंदी को भारतीय संघ के शासन संचालन की भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है।

राष्ट्रभाषा

किसी देश की अधिकांश या बहुतायत आबादी के द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राष्ट्रभाषा कहा जाता है. भारत में बहुतायत आबादी द्वारा हिंदी भाषा बोलने के बाद भी उसे राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं है।

भारत में किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया गया है संविधान में वर्णित 22 भाषाओं को भारत में सामान दर्जा प्राप्त है।

हिंदी व्याकरण

वह विद्या जिसके अंतर्गत बोलचाल और साहित्य में प्रयुक्त भाषा के स्वरूप, उसके गठन, अवयवों तथा प्रकारों, उनके पारस्परिक संबंधों और रचनाविधान तथा रूप परिवर्तन का विवेचन किया जाता है।

हिंदी भाषा को शुद्ध रूप में लिखने और बोलने संबंधी नियमों का बोध करानेवाला शास्त्र है।

यह हिंदी भाषा के अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग है

यह भाषा संबंधी नियमों से संबद्ध पुस्तक है, इसमें हिंदी के सभी स्वरूपों का चार खंडों के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है:-

- (1) वर्ण विचार के अंतर्गत ध्वनि और वर्ण
- (2) शब्द विचार के अंतर्गत शब्द के विविध पक्षों संबंधी नियमों
- (3) वाक्य विचार के अंतर्गत वाक्य संबंधी विभिन्न स्थितियों एवं
- (4) छंद विचार में साहित्यिक रचनाओं के शिल्पगत पक्षों पर विचार किया गया है

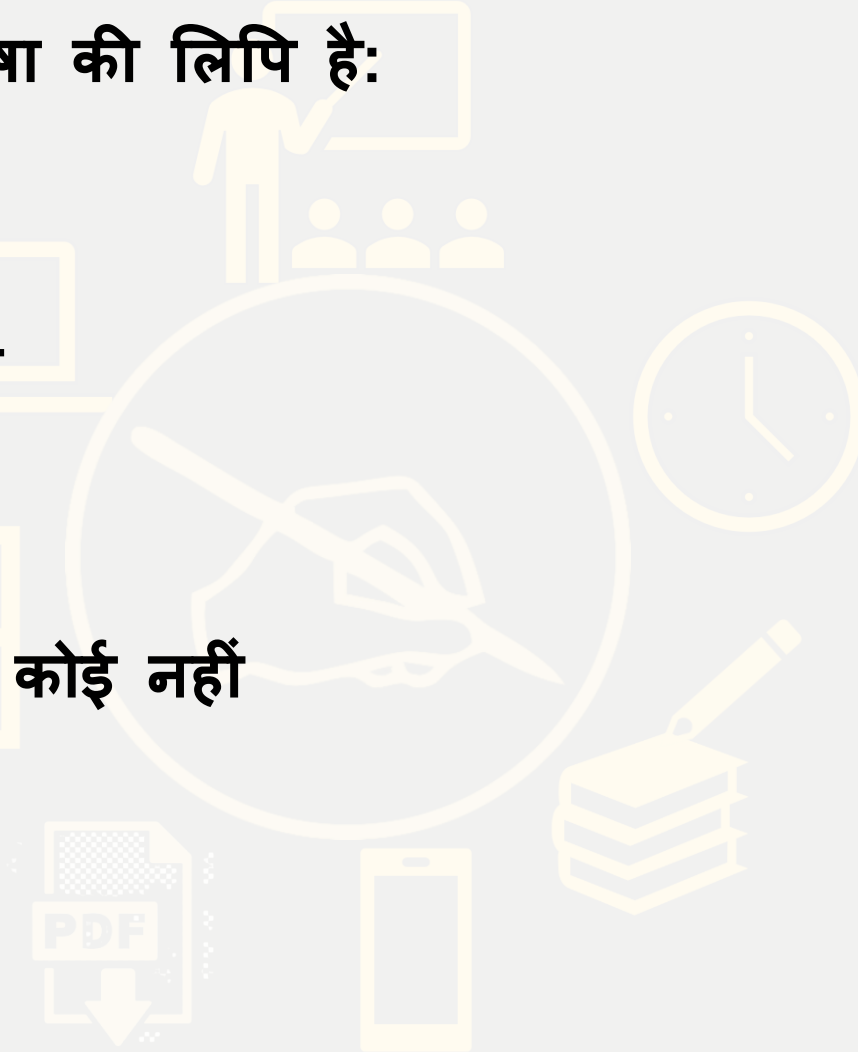
1. हिंदी भाषा की लिपि है:

A. प्राकृत

B. देवनागरी

C. पाली

D. इनमें से कोई नहीं



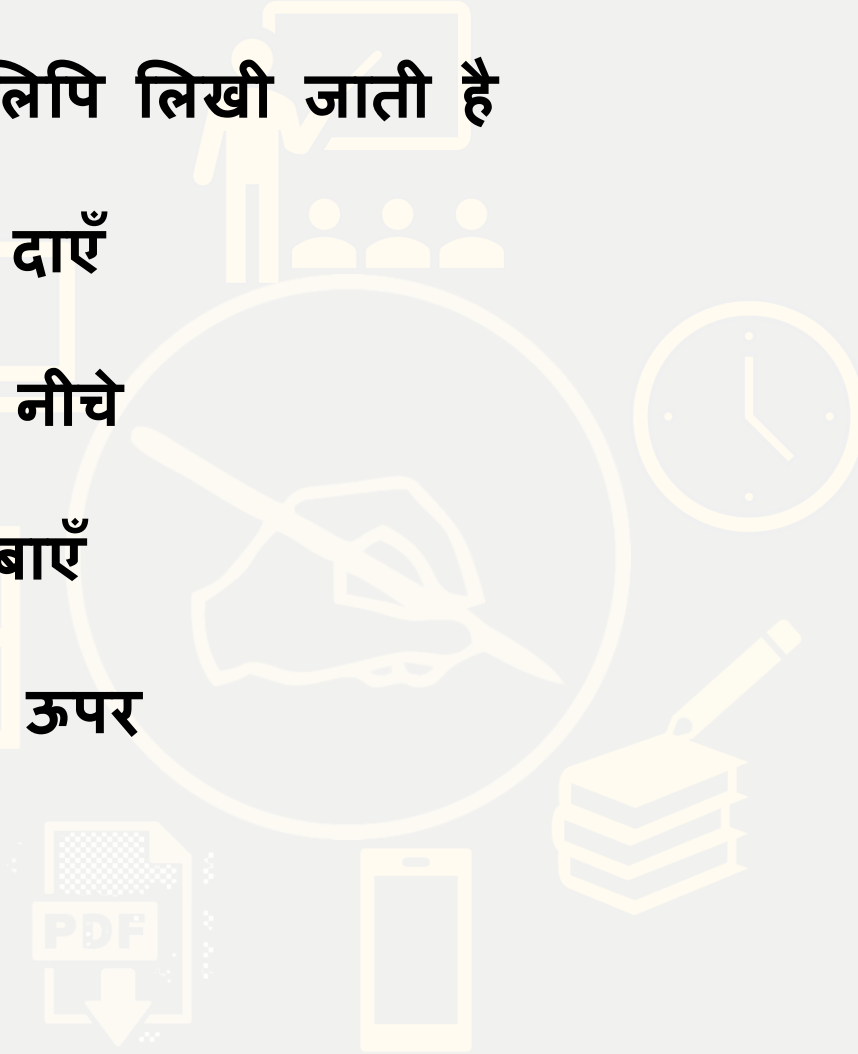
2. अरबी लिपि लिखी जाती है

A . बाएँ से दाएँ

B. ऊपर से नीचे

C. दाएँ से बाएँ

D . नीचे से ऊपर



3 पंजाबी किस लिपि में लिखी जाती है?

A. देवनागरी

B. रोमन

C. फारसी

D. गुरुमुखी



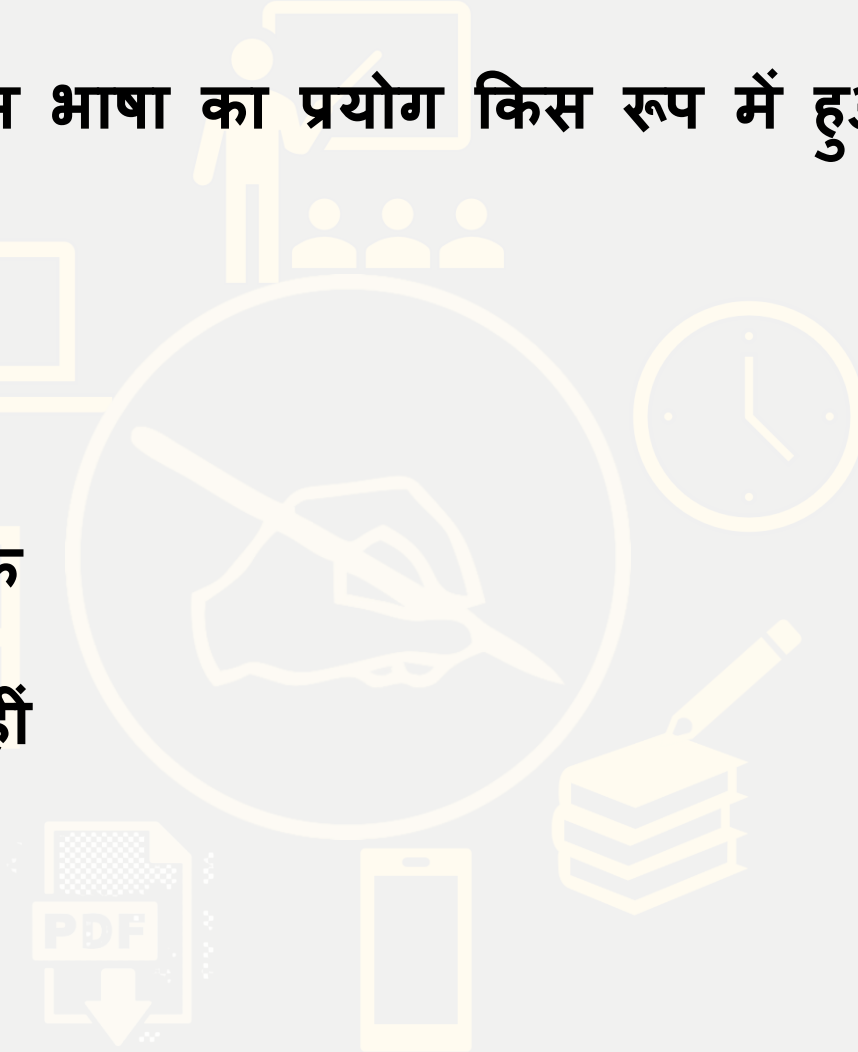
4. सर्वप्रथम भाषा का प्रयोग किस रूप में हुआ ?

A . लिखित

B . मौखिक

C . सांकेतिक

D . कोई नहीं



5. भाषा के लिखने का ढंग है:

A .व्याकरण

B .लिपि

C .वाक्य

D .शब्द

